



ज्ञानविधि

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)

IIFS Impact Factor-4.5

Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026

Page No.- 316-319

©2026 Gyanvidha

<https://journal.gyanvidha.com>

Author's :

डॉ. विजयश्री

सहायक आचार्या, संस्कृत, पालि एवं प्राकृत
विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र.

Corresponding Author :

डॉ. विजयश्री

सहायक आचार्या, संस्कृत, पालि एवं प्राकृत
विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र.

वैदिक ज्ञान परंपरा एवं श्रीमद्भगवद्गीता

श्रीमद्भगवद्गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं है। बल्कि यह मानवीय जीवन का एक सम्पूर्ण दर्शन है। जब कोई व्यक्ति गीता को पढता है और समझता है, तो उसका प्रभाव उसके विचारों, व्यवहार और कर्तव्यों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। गीता हमें यह सिखाती है कि समस्याएँ जीवन का हिस्सा हैं, लेकिन सही दृष्टिकोण और सही कर्म हमें हर कठिनाई से निकाल सकता है। श्रीमद्भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र तथा उपनिषदों को प्रस्थानत्रयी कहा जाता है।

श्रुति प्रस्थान

स्मृति प्रस्थान

न्याय प्रस्थान

श्रीमद्भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र और उपनिषदों को समूहरूप से प्रस्थानत्रयी कहा जाता है। जिनमें प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों मार्गों का तात्त्विक विवेचन है। ये वेदान्त के तीन मुख्य स्तम्भ माने जाते हैं। इनमें भगवद्गीता को स्मृति-प्रस्थान, उपनिषद- जो कि वेदों के दार्शनिक रहस्यों की व्याख्या और वेदों का अंतिम भाग है, को श्रुति प्रस्थान, महर्षि बादरायण कृत ब्रह्मसूत्रों (555) को न्याय प्रस्थान कहा जाता है।

प्राचीन काल में भारतवर्ष में जब कोई गुरु अथवा आचार्य अपने मत का प्रतिपादन एवं उसकी प्रतिष्ठा करना चाहता था तो उसके लिए सर्वप्रथम वह इन तीनों पर भाष्य लिखता था। आदि शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य आदि बड़े-बड़े गुरुओं ने ऐसा करके ही अपने मत का प्रतिपादन किया। गीता महाभारत के छठे पर्व (अध्याय 25-42) भीष्म पर्व का भाग (हिस्सा) होने के कारण स्मृति श्रेणी में आती है, और उपनिषदों के ज्ञान को व्यावहारिक पक्ष (धर्म, कर्म, भक्ति, ज्ञान) परंतु ईश्वरीय वाणी होने के कारण इसे गीतोपनिषद् भी कहा जाता है। क्योंकि ये वेदों और उपनिषदों के सार को समेटे हुए है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण स्वयं है कि-

वेदानां सामवेदोस्मि²

प्रस्थान त्रयी हिंदू धर्म की दार्शनिक नींव है।

तीनों चरण :

1. उपनिषद्- मूल सत्य ज्ञान क्या है?
2. ब्रह्मसूत्र- उस ज्ञान का तर्क संगत विश्लेषण क्यों और कैसे?
3. भगवद्गीता- उस ज्ञान को जीवन में उतारने की विधि

मनुष्यता के कर्तव्य बोध और आत्मबल के लिए गीता के पठन का आधार:-

"क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।

क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं व्यक्तोत्तिष्ठ परन्तप ॥³

श्रीभगवान् कहते हैं- हे अर्जुन! कायरता मत दिखाओ, यह तुम्हें शोभा नहीं देती। हृदय की दुर्बलता को त्याग कर अपने कर्तव्य के लिए खड़े हो जाओ। यह श्लोक कर्तव्य पालन में टूटता और मन की दुर्बलता पर विजय का संदेश देता है। वैदिक संदर्भ में यजुर्वेद के कर्मकाण्ड का भी यही आधार है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भूमा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥⁴

अर्थात् मनुष्य का अधिकार केवल कर्म पर है, फल पर नहीं। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हम अक्सर परिणाम की चिंता में घिर जाते हैं - अच्छे नंबर आएंगे या नहीं, नौकरी मिलेगी या नहीं, लोग क्या कहेंगे? भगवद्गीता हमें सिखाती है कि अगर हम निष्ठा, ईमानदारी और लगन (मन) से अपना काम करते हैं, तो परिणाम अपने आप हमारे पक्ष में ढल जाते हैं।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥⁵

अपने लक्ष्य पर अडिग रहना:-

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव

स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत ब्रजेत किम् ॥⁶

अर्जुन युद्ध से डर गया था मोह था- उसे भ्रम था, मोह था, कमजोरी थी। लेकिन कृष्ण ने समझाया : "स्थिर बुद्धि" यानी जो व्यक्ति अपने निर्णय और विचारों में टूट रहता है, वही जीवन में सफलता पाता है। ईशावास्योपनिषद् (ईशावास्यमिदं सर्वम्) के 18 मंत्रों में संपूर्ण ब्रह्मांड, ईश्वर, आत्मा और ब्रह्माण्ड के गूढ़ दर्शन का वर्णन है।

हम सभी के जीवन में ऐसे क्षण आते हैं, जब हम हार मानने लगते हैं। गीता हमें प्रेरणा देती है कि हालात (परिस्थितियाँ) चाहे जैसी हों, हमें अपने लक्ष्य पर केन्द्रित रहना चाहिए।

ईश्वर सर्वव्यापकता : - वेदों का पुरुष तत्त्व ही गीता में विराट पुरुष के रूप में व्यक्त हुआ है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में वर्णन है कि - "सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥"⁸

परमात्मा सर्वव्यापी है। सृष्टियाँ या लोक जितने भी हैं, परमात्मा से बाहर कुछ भी नहीं है।

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।

सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥⁹

आत्मा संबंधी ज्ञान :- आत्मा अजर-अमर है, यह सिद्धांत उपनिषद और गीता में समान रूप से उपस्थित है।

कठोपनिषद कृष्ण यजुर्वेद की कठ शाखा का हिस्सा है अधोलिखित मंत्र यम और नचिकेता के संवाद के माध्यम से ब्रह्मविद्या का सार बताता है।

न जायते म्रियते वा विपश्चित् नायं कुतश्चिन् बभूव कश्चिन् ।

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥¹⁰

आत्मा का स्वरूप जन्म और मृत्यु के बंधनों से मुक्त है और यह शाश्वत, अपरिवर्तनीय है, जो मनुष्य को आत्म-ज्ञान और परम सत्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।¹¹

आत्मा ब्रह्म एकता : जो ब्रह्म उपनिषदों में है, वही गीता में ईश्वर रूप में हृदयस्थ बताया गया है।

'छांदोग्योपनिषद का प्रसिद्ध महावाक्य "तत्त्वमसि" है'¹², यह महावाक्य छांदोग्योपनिषद उपनिषद के छठे अध्याय में ऋषि उद्दालक द्वारा अपने पुत्र श्वेतकेतु को दिए गए उपदेश में आता है, जो आत्मा और ब्रह्म की एकता का बोध कराता है।

तत्- (वह) ब्रह्म है।

त्वम्- (तुम) जीवात्मा है,

असि- हो

अर्थात् तुम वही हो, (तुम ब्रह्म ही हो)

"ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥¹³

हे अर्जुन ! शरीर रूपी यन्त्र में आरूढ हुए संपूर्ण प्राणियों को परमेश्वर अपनी माया से उनके कर्मों के अनुसार भ्रमण कराता हुआ सब प्राणियों के हृदय में स्थित है।

संपूर्ण ब्रह्मांड ईश्वर से व्याप्त है

ईशावास्यामिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥¹⁴

भावनात्मक संतुलित :- श्री भगवान् कहते हैं :

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।

सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥¹⁵

अर्थात् सुख दुःख, लाभ- हानि, जीत- हार, इन सभी में समान बने रहना ही सच्चा योग है। आज के समय में जहां तनाव, चिंता और मानसिक दबाव बहुत बढ़ गया है, वहां गीता का यह संदेश और भी आवश्यक हो जाता है।

योगश्चित्तवृत्ति निरोधः¹⁶ चित्त की वृत्तियों (मन के उतार-चढ़ाव/विचारों) को रोकना या शांत करना ही योग है। यह मन की चंचलता को नियंत्रित कर मानसिक स्थिरता, शांति और आत्मा के वास्तविक स्वरूप का अनुभव करने की एक प्रक्रिया है, न कि केवल शारीरिक व्यायाम।

समाधि के रूप में योग आठ प्रकार यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि एकाग्रता और आत्म-साक्षात्कार के लिए आवश्यक हैं।

गीता हमें सिखाती है कि सच्चा ज्ञान वही है जो हमारे व्यवहार में उतरे। गीता हमें बदलने के लिए नहीं कहती, बल्कि हमें बेहतर बनाने की प्रेरणा देती है। कर्म, साहस, सत्य, संतुलन और समर्पण-गीता के इन 5 उपदेशों से न केवल हमारा जीवन, बल्कि पूरा समाज बदल सकता है। गीता का सार्थक संदेश है :-

"स्वयं को पहचानो,

अपने कर्म को श्रेष्ठ बनाओ,

समाज के लिए प्रेरणा बनें।

प्रकृति-पर्यावरण को बचाएँ।"

संदर्भ :

1. वेदान्तसार, पृ0 10, डॉ0 कृष्णकान्त त्रिपाठी
2. श्रीमद्0,10.22
3. श्रीमद्0,2.3
4. श्रीमद्0,2.47
5. ईशोपनिषद्, मंत्र संख्या-2
6. श्रीमद्0,2.54
7. शुक्ल यजुर्वेद का 40 वाँ अध्याय, ईशोपनिषद् मंत्र संख्या-1
8. ऋ0, पुरुष सूक्त, 10.90
9. श्रीमद्0, 13.13
10. कठो0, 1.12.18
11. श्रीमद्0, 2.20
12. छान्दोग्य उपनिषद्, 6.8.7
13. श्रीमद्0, 18.61
14. ईशोपनिषद्, मंत्र संख्या-1
15. श्रीमद्0, 2.48
16. योगसूत्र, 1.2